भगवान विष्णु और सृष्टि का सृजन

पॉल हॉकवुड द्वारा पुनःकथित कहानी

क्या आपने कभी सोचा है कि यह अद्‌भुत सृष्टि अस्तित्व में कैसे आई और यह इतना प्रचुर सौन्दर्य क्यों बिखेरती है? 'श्रीमद्‌भागवतपुराण' में इस सृष्टि के सृजन और जगत को हम जिस रूप में जानते हैं, उसकी उत्पत्ति की कथा सुनाई गई है; 'श्रीमद्‌भागवतपुराण' पौराणिक कथाओं व प्रसंगों के साथ-साथ दार्शनिक शिक्षाओं का एक प्राचीन भारतीय ग्रन्थ है। और अब मैं आपको सृष्टि के सृजन की यह अनुपम गाथा सुनाता हूँ।

इस सृष्टि की उत्पत्ति के पूर्व, न पृथ्वी थी, न अन्तरिक्ष और न प्रकाश था; था तो बस अन्धकार से घिरा अन्तहीन महासागर जिसमें तीनों लोक जलप्रलय में डूब गए थे और इस कारण पिछले युग का अन्त हो गया था। परम चेतना के साक्षात् स्वरूप, भगवान श्रीविष्णु अपने प्रिय शेषनाग की शय्या पर विश्राम कर रहे थे। अपने सम्पूर्ण वैभव में, जल पर तैरते हुए सहस्त्रशीशधारी शेषनाग, भगवान श्रीविष्णु की रक्षा हेतु अपने सहस्त्रों फन फैलाए हुए थे जो मणियों से सुसज्जित थे और और उनकी चमक आस-पास के अन्धकार को थोड़ा-बहुत दूर कर रही थी। भगवान श्रीविष्णु अलौकिक पीताम्बर और रत्नजड़ित स्वर्ण मुकुट धारण किए हुए थे जो एक नक्षत्र की भाँति दमक रहा था। भगवान योगनिद्रा में थे; ध्यान और निद्रावस्था के बीच की इस अवस्था में उनके कमल-नयन हल्के-से खुले थे। इस प्रकार, भगवान श्रीविष्णु महाज्ञानी ऋषि-मुनियों को यह संकेत दे रहे थे कि निश्चित रूप से अब सृजन के एक नए चक्र का आरम्भ होने वाला है।

भगवान वहाँ, क्षीरसागर में वास कर रहे थे; उन्होंने सभी प्राणियों को अपने शरीर के भीतर सूक्ष्म रूप में जीवित रखा था, वैसे ही जैसे लकड़ी में अग्नि प्रज्वलित करने की क्षमता छिपी होती है। इस प्रलयजल में अकेले तैरते हुए भगवान श्रीविष्णु एक सम्पूर्ण प्रलयकाल तक परमानन्द में लीन रहे; प्रलय दो सृष्टियों के बीच का वह दीर्घकाल है जब समय की गति बिल्कुल थम जाती है। भगवान श्रीविष्णु दोनों के मध्य स्थित, इस मौन से परिचित थे। ऐसा पहले भी हो चुका था। और हर बार, इस महामौन से पहले, भगवान कालचक्र में ऐसी व्यवस्थाएँ करते कि सही क्षण पर उनके नेत्र खुल जाते। ठीक उसी समय, भगवान जीवन का व जीवलोकों का सृजन करने का कार्य आरम्भ करते। अब योगनिद्रा से बाहर आए भगवान श्रीविष्णु ने अपने भीतर एक वृहद व रमणीय सृष्टि की कल्पना की। ऐसी कल्पना

करने के बाद उन्होंने संकल्प किया कि यह सुरम्य सृष्टि अपनी सम्पूर्ण सुन्दरता व महिमा के साथ अस्तित्व में आए।

सृष्टि का सृजन करने के भगवान श्रीविष्णु के इस संकल्प ने, सर्वप्रथम उनके ही अन्दर आकार ग्रहण किया—उनकी नाभि से उदित हुए एक अद्‌भुत पूर्णपल्लवित कमल के रूप में। इस कान्तिमान पुष्प में विराजित थे ब्रह्मदेव, जिन्हें भगवान ने सृजन का कार्य सौंपा।

ब्रह्मदेव ने कमल से बाहर आकर सभी दिशाओं में देखा जिसके कारण वे चतुर्मुखधारी हो गए जो उनकी ब्रह्माण्डीय दृष्टि व शक्ति की व्यापकता का प्रतीक है। शेषनाग की भव्य शैया पर लेटे भगवान श्रीविष्णु के वैभव से मन्त्रमुग्ध होकर और सृष्टि-सृजन की भगवान श्रीविष्णु की संकल्पशक्ति से ब्रह्मदेव की यह तीव्र इच्छा हुई कि वे भगवान की कल्पना के अनुरूप ब्रह्माण्ड का सृजन करें।

ब्रह्मदेव ने भगवान का महिमागान किया व पूजा-अर्चना की और उनसे इस महान कार्य हेतु आशीर्वाद के लिए प्रार्थना की जिसका आरम्भ होने ही वाला था। भगवान श्रीविष्णु ने कहा कि—जब भी आप एकाग्रचित्त होकर भगवान की सेवा व आराधना करेंगे तब, "आप देखेंगे कि आपमें व समस्त संसार में मैं हूँ और आप व समस्त संसार मुझमें है।" भगवान से यह आशीष पाकर, विस्मयाभिभूत हुए ब्रह्मदेव नक्षत्रों व ग्रहों, मानवजाति व समस्त जीव-जन्तुओं के सृजन-कार्य में लीन हो गए।

इस कथा के द्वारा 'श्रीमद्‌भागवतपुराण' हमें यह सिखाता है कि हम विश्व में कहीं भी रहें, हम अनेकानेक तरीक़ों से भगवान की उपस्थिति की अनुभूति कर सकते हैं—आकाश, महासागर, पर्वत शृंखलाओं व मैदानों, तारों और चन्द्रकलाओं में जीवनसत्त्व के दर्शन करके। चित्प्रकाश इस धरा के सभी मनुष्यों, जीव-जन्तुओं व वनस्पतियों में जगमगा रहा है। संसार में हर कोई और सब कुछ, भगवान श्रीविष्णु के सौन्दर्य व उनकी महिमा का प्रतिबिम्ब है।

©२०२१एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।